राज्य अध्याय 14

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **2राजाओं 5,6,17 व 25**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (2राजाओं 5,6,17 व 25) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(मसीही कलीसिया)*** **(2) प्रेरितों. 2:42**

दो–दो करके ***पुनरावलोकन करें:***

(2) कलीसिया में पायी जाने वाली गतिविधियां। प्रेरितों 2:42। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों की पत्री)*** **रोमियों 4:1–17अ**

परिचय। बाइबल अध्ययन के पांच कदमों का इस्तेमाल करते हुए **रोमियों 4:1–17** का साथ मिलकर अध्ययन करें।

रोमियों अध्याय 3 में, पौलुस कहता है कि उद्धार पाने के लिए विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाता है। रोमियों 4 में वह साबित करता है कि बाइबल में हमेशा से ही विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना ही उद्धार पाने का एकमात्र तरीका रहा है, अतः यह ही पुराने नियम में भी उद्धार पाने का तरीका था।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 4:1–17अ तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक–एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

4:1-8

खोज 1. **पौलुस द्वारा दिये गये दो तक इस बात को प्रमाणित करते हैं कि विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना बाइबल में उद्धार पाने का एकमात्र तरीका रहा है।**

वह पुराने नियम के दो वचनों को आधार पर अपने तक प्रस्तुत करता है।

(1) उसका पहला तर्क रोमियों 4:1-5 से हैं।

अब्राहम का विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया।

पौलुस पूछता है कि "हम क्या कहें हमारे शारीरिक पिता अब्राहम को क्या प्राप्त हुआ? पौलुस ढ़ोग करते हुए एक बहस करता है, जिसका वह तुरन्त ही खण्डन कर देता है। वह कहता है कि, यदि अब्राहम व्यवस्था के कामों से धर्मी ठहरा था,जैसे कि बहुत से यहूदी, मसीही और मुसलमान बहस करते हैं, तो उसके पास लोगों के सामने घमण्ड करने के लिए कुछ होता, लेकिन परमेश्वर के निकट नहीं। इस तरह से पौलुस कहता है कि *अब्राहम कामों (खतना) के द्वारा धर्मी नहीं ठहराया गया था।*

वह बाइबल का एक हवाला देते हुए साबित करता है कि अब्राहम अपने व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहराया गया था। वह उत्पत्ति का हवाला देता है। अब्राहम ने परमेश्वर से बहुत सी प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किया था। हालांकि बहुत लम्बे समय तक वे प्रतिज्ञाएं पूरी नहीं हुई थीं,लेकिन अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया। उसने विश्वास किया कि परमेश्वर ने उससे जो कुछ प्रतिज्ञा की हैं वह सत्य है, और वह अपने समय में उसे पूरा करेगा। परमेश्वर ने उसके इसी विश्वास को धार्मिकता गिना। इस तरह से अब्राहम व्यवस्था द्वारा ठहराये गये कामों (खतना) को करके नहीं वरन विश्वास(परमेश्वर पर व उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करके) के द्वारा धर्मी ठहरा था। "धर्मी जन के रूप में ठहराना,व्याख्या करना या मानना" "धर्मी गिने जाने से" बेहतर अनुवाद हो सकता है, क्योंकि विश्वास को प्रतिफल नहीं दिया गया है।

2 और 3 पद में "कामों द्वारा धर्मी ठहरना" और "विश्वास द्वारा धर्मी ठहरने" के बीच में विरोध है। यह विरोध केवल "व्यवस्था[1] के अनुसार (धार्मिक काम)काम करने वाले जन" और "व्यवस्था के अनुसार (धार्मिक काम) न करने वाले लोगों" के बीच में ही नहीं वरन "(यहूदी, मसीही, या मुस्लिम) व्यवस्था[2] के अनुसार काम करने" और "*सिर्फ विश्वास* करने वाले जन (जो बाइबल के परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञाओं पर) के बीच में है। अब्राहम का उद्धार व्यवस्था के कामों (खतना) के प्रतिफल के रूप

[1].यहूदियों की तोरह, मसीहियों की "व्यवस्था" और मुसलमानों की "शरिया"।

[2]. अन्यजातियां या "गैर विश्वासी लोग" (ऐसे लोग जिनका कोई धर्म नहीं है)।

में नहीं परन्तु बाइबल के परमेश्वर पर विश्वास (बाइबल में किये गयी उसकी प्रतिज्ञाओं) के द्वारा हुआ था। "विश्वास" कोई मेहनताना या प्रतिफल नहीं है। विश्वासियों को "धार्मिकता (उद्धार) अनुग्रह के द्वारा प्राप्त हुआ है (इफिसियों 2:8-9)।

पद 4 व 5 में "मज़दूरी" (व्यवस्था के अनुसार किसी जन द्वारा किये गये काम का हक) और "अनुग्रह" (विश्वास करने वाले जन के अयोग्य होने के वाबजूद मिले उपहार) के बीच विरोधाभास है। परमेश्वर ने अब्राहम को परमेश्वर व उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने के लिए अपने अनुग्रह से धर्मी ठहराया। इसलिए, विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना और अनुग्रह द्वारा धर्मी ठहराया जान समान ही है (इसका अर्थ है कि विश्वासी जन, अयोग्य होने पर भी "धर्मी ठहराया गया")!

इसके अलावा, अब्राहम किसी अन्य ईश्वर या किसी अन्य धर्म में "सामान्य विश्वास करने के द्वारा"(या किसी अन्य धर्म के ईश्वर के द्वारा दी गयी पुस्तक पर किये गये विश्वास पर) धर्मी नहीं ठहराया गया था, लेकिन वह उस परमेश्वर में होकर एक विशेष प्रकार के विश्वास द्वारा धर्मी ठहारया गया था जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है और जो यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ईश्वररहित और अधर्मी को भी धर्मी ठहराता है।

(2) उसका दूसरा तर्क रोमियों 4:6-8 से लिया गया है।
दाऊद के बुरे काम उसके विरूद्ध अधार्मिकता नहीं गिने गये।

पौलुस ने भजन संहिता 32:1-2 को उद्धत किया। दाऊद कहता है कि, क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा (बाइबल में अपने आप को प्रगट करने वाला परमेश्वर) लेखा न ले। जिसे दाऊद "अधर्म का लेखा नहीं लेना" कहता है", उसे ही पौलुस सकारात्मक रूप में "धर्मी ठहराये जाने के रूप में" सम्बोधित करता है। इब्री कविताओं की तुलना करने पर,"पापों का क्षमा (ढांपा जाना) किया जाना" और "धर्मी ठहराया जाना"(पापियों का) एक ही बात है और दोनों की बातों का अर्थ उनकी अधार्मिकता का न गिना जाना है।" न्याय के दिन में इन लोगों के पापों का लेखा नहीं लिया जाएगा। यशायाह कहता है," तमेरे ब पपें को तू ने अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।"(यशायाह 38:17) मीका कहता है कि," वह फिर हम पर दया करेगा, और हमारे अधर्म के कामों को लताड़ डालेगा। तू उनके सब पापों को गहिरे समुद्र में डाल देगा। और परमेश्वर कहते हैं कि, "मैं उन के अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उन के पापों को फिर स्मरण न करूंगा।

हालांकि "पापों की क्षमा" धर्मी ठहराये जाने का ही एक भाग है, बाइबल में "धर्मी ठहराया जाने" में बहुत कुछ शामिल है। इसमें निम्न बातें शामिल हैं।

- अपराधों (पापों) की क्षमा
- यह इस बात की घोषणा है कि विश्वास परमेश्वर की नज़रों में 100 प्रतिशत धर्मी है।
- परमेश्वर के राज्य में ग्रहण किया जाना (लोग, कलीसिया, परमेश्वर का राज्य)
- और परमेश्वर के प्रेम का अनुभव (बाइबल के परमेश्वर द्वारा चुना हुए व्यक्ति होना)

लेकिन क्योंकि यह अनुच्छेद "अपराधों अर्थात पापों को न गिने जाने की बातें करता है" इसलिए यह इस बात का प्रमाण है कि पुराने नियम में विश्वासी लोग अपने विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये जाते थे, व्यवस्था के कामों के अनुसार नहीं। यह गद्यांश एक व्यक्ति को धन्य नहीं कहता है क्योंकि वह भले या धर्म के काम कर रहा है, लेकिन इसके विपरीत उसके भले काम और धार्मिक काम उसके विरूद्ध गिने

नहीं गये हैं, और न ही उसे इसके लिए कोई सज़ा मिली है, वरन उसे पूरी तरह से क्षमा कर दिया गया है।

क्योंकि यीशु मसीह ने उसके लिए छुड़ोती का दाम चुका दिया है (मरकुस 10:45; 1पतरस 1:18-19) इसलिए उस पर कोई दोष नहीं लगाया जाएगा, और न ही उसे न्याय के दिन दण्डित किया जाएगा! बाइबल जिस चीज को वास्तव में सच्ची आशीष मानती है वह कुछ नियमों का पालन करने के बाद प्राप्त किया जाने वाला प्रतिफल नहीं है[3], वरन उस आशीष को हम पर उण्डेलना है जिसके लायक हम वास्तव में नहीं थे।

4:9-13

खोज 2. **पौलुस के दो और तर्क हैं जो यह साबित करते हैं कि विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना ही बाइबल के अनुसार उद्धार पाने का रास्ता रहा है।**

उसका तर्क अब्राहम के पहले विश्वास और उसके बहुत बाद में किये गये खतने के बीच विरोधाभास के बारे में बताता है। और वह व्यवस्था के कामों द्वारा धर्मी ठहराये जाने का विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये जाने के द्वारा विरोध करता है।

(1) **उसका तीसरा तर्क रोमियों 4:9-12 से हैं।**

अब्राहम बाद में किये गये उसके खतने के द्वारा धर्मी नहीं ठहरा था, वरन वह अपने प्रारम्भिक विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया था।

पौलुस प्रश्न पूछता है, "विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना क्या केवल खतना किये हुए यहूदियों[4] के लिए ही आशीष है या यह अन्यजातियों अर्थात खतनारहित लोगों के लिए भी आशीष है? वह यह सवाल पूछता है कि क्या अब्राहम अपने खतने के पहले धर्मी ठहराया गया था या खतना कराने के बाद धर्मी ठहराया गया था। सच्चाई तो यह है कि अब्राहम ने अपने खतने के करीब 14 साल पहले परमेश्वर पर विश्वास किया (उत्पत्ति 17:1-14) और परमेश्वर ने उसे धर्मी ठहराया (उत्पत्ति 15:4-6) यह इस बात को साबित करता है कि खतना कराना(अर्थात व्यवस्था का पालन करना) न तो धर्मी ठहराये जाने की जरूरी शर्त थी और न यह धर्मी ठहराये जाने का तरीका था। खतने से अब्राहम के विश्वास करने की दशा पर और न ही विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने पर कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि खतना अभी भी परमेश्वर के लोगों में नहीं पाया जाता है। लेकिन जब 14 वर्षों के बाद खतना की विधी को ठहराया गया, तो उसका सम्बन्ध विश्वास से था। खतना को धर्मनिरपेक्ष अनुष्ठान, न ही यह किसी जाति का चिन्ह था, परन्तु इसकी अपना धार्मिक अभिप्राय और मूल्य था। खतना को पुराने नियम में परमेश्वर के द्वारा "अनुग्रह की वाचा के चिन्ह और मुहर के रूप में" बनाया गया था, जो वाचा उसने अब्राहम और उसके वंशजों के साथ में बांधी थी (उत्पत्ति 17:11)। खतना विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने का चिन्ह और उसकी मुहर था। "एक चिन्ह के रूप में" खतने ने यह प्रगट किया कि धर्मी ठहराये जाने वाला विश्वास पहले भी मौजूद था और उस समय में मौजूद था (अब्राहम के विश्वास ने उसे धर्मी ठहराया)। "एक मुहर के रूप में" खतना इस बात का जामिन ठहरा था कि जिस विश्वास के द्वार वह धर्मी ठहरा था वह सच्चा था और परमेश्वर ने उसे स्वीकार किया था। इसलिए, खतना (अब्राहम और घर के सभी

---

[3] धार्मिक नियमों को वर्णन यहूदियों के "आनुष्ठानिक नियमों" और मुसलमानों के "दीन" में किया गया है।

[4] खतना वाले मुसलमान

पुरूष वर्ग का खतना) अनुग्रह की वाचा के चिन्ह और मुहर के रूप मौजूद होने के साथ साथ इस बात चिन्ह और मुहर भी था कि वहां पर विश्वास मौजूद था और उसी विश्वास के प्रभु के द्वारा विश्वास माना गया। बिना इस विश्वास के अनुग्रह की वाचा और मनुष्यों द्वारा किया गया खतना पूरी तरह निरर्थक और बेकार थे।

अब्राहम ने परमेश्वर से खतने को एक चिन्ह और एक मुहर के रूप में इसलिए प्राप्त किया कि वह न केवल सभी खतनारहित विश्वासियों का ही नहीं (अन्यजातियों में से बने विश्वासियों का) वरन वह सभी खतना कराये विश्वासियों (अर्थात यहूदियों में से विश्वासियों) में का भी पिता बन सके। अन्यजातियों में खतनारहित विश्वासियों की बात करें तो, अब्राहम का खतना कराने से कई वर्षों पहले धर्मी ठहराया जाना इस बात को साबित करता है, यीशु मसीह में विश्वास करने वाले खतनारहित विश्वासी(अन्यजातियों में से बने मसीही) भी धर्मी ठहराये जाएगें। अगर हम खतना कराने वाले विश्वासियों की बात करें तो, उनका खतना कराया जाना नहीं, वरन यह तथ्य कि उन्होंने अब्राहम के विश्वास के पदचिन्हों का अनुसरण किया, इस बात को सुनिश्चित करता है कि यीशु मसीह में खतना कराये हुए विश्वासी भी (अर्थात यहूदियों में विश्वास करने वाले) धर्मी ठहरेगें (रोमियों 4:12)! लोगों को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया उनके खतना के कारण नहीं(अर्थात व्यवस्था के कामों को कारण नहीं)।

(1) उसका चौथा तर्क रोमियों 4:13 से है।

क्योंकि परमेश्वर की ओर से यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गयी थी, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली।

यहां पर दी गयी व्यवस्था, मूसा की वह व्यवस्था नहीं थी जो उसे सिनै पर्वत पर 1447 ई.पू दी गयी थी। अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को 2092 ई.पू प्राप्त कर लिया था। जब वह 75वर्ष का बूढ़ा था(उत्पत्ति 12:4; उत्पत्ति 15:4–19) अर्थात याकूब के मिस्र छोड़ने से 215 वर्ष पहले (1877 ई.पू) और उससे भी 430 वर्ष पहले सिनै पर एक और व्यवस्था दी गयी थी (गलातियों 3:17)। इस तरह से वाचा बांधने के 645 वर्ष के बाद में व्यवस्था दी गयी थी। मूसा को व्यवस्था देते समय अब्राहम से बांधी गयी अनुग्रह की वाचा को नज़रअन्दाज़ नहीं किया गया था (गलातियों 3:17–22)!

“व्यवस्था” भी अपने आप में पूरे पुराने नियम का प्रकाशन नहीं है, क्योंकि पुराने नियम का प्रकाशन भी विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने की बात करता है (रोमियों 3:21)।

यहां पर दी गयी “व्यवस्था” उन करने या नहीं करने वाली आज्ञाओं और आदेशों से मिलकर बनी है जिसके तहत हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करना पड़ता है यह व्यवस्था को पूरा करने की मांग करती है। परमेश्वर की यह धार्मिक और पवित्र मांग है कि जितने लोग शत–प्रतिशत धार्मिक लोग जिये और अधार्मिक लोगों को शत–प्रतिशत दण्ड दिया जाए। व्यवस्था आज्ञापलन करने के लिए कहती हैं, लेकिन अगर उसका उल्लंघन होता है तो परमेश्वर का क्रोध सामने आता है। तुलना परमेश्वर द्वारा दी गयी व्यवस्था जिसमें अपराध या गलती करने पर कृपा की कोई जगह नहीं है और परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बीच में है जिसे उसके अनुग्रह से ही प्रदान किया गया है।

4:14-16

खोज 3. **परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को व्यवस्था के कामों से हासिल नहीं किया जा सकता, वरन केवल विश्वास से ही प्राप्त किया जा सकता है।**

यदि धार्मिक ठहराये जाने की बात करें तो, "व्यवस्था के कार्य" और "परमेश्वर में विश्वास" दोनों अपने आप में अनोखें हैं। यहूदी, मसीही, मुसलिम या कोई भी ऐसे लोग जो व्यवस्था के अनुसार जीते हैं वे अपने आपको परमेश्वर की दृष्टि में अपने आप को धर्मी ठहरवाने की (उद्धार पाने की) कोशिश में लगे हुए लोग हैं (व्यवस्था के कामों को करके या जितना हो सके धार्मिक नियमों का पालन करके (या स्वर्ग[5] व फिरदौस में जाने की)। लेकिन, क्योंकि मनुष्य बार बार नियमों का उल्लघन करता है और वह कभी व्यवस्था का सम्पूर्ण रूप से पालन नहीं कर सकता, वह व्यवस्था परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराये जाने की बजाय परमेश्वर को क्रोध को प्रगट करती है।

रोमियों 4:15 में लिखा है, "जहां व्यवस्था नहीं वहां उसका उल्लंघन भी नहीं होता है।" यहां पर "व्यवस्था" का अर्थ परमेश्वर की धार्मिक मांगों से है, खास तौर पर यह कि सारे लोग धार्मिक हो और धार्मिकता के साथ जीवन व्यतीत करें तथा व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले सभी लोग को दण्ड दिया जाए। यह तो पूरी तरह से स्पष्ट हो चुका है कि कोई भी जन परमेश्वर की धार्मिक मांगों को पूरा नहीं कर सकता। जब पौलुस कहता है, "जहां व्यवस्था नहीं है, वहां उसका उल्लंघन भी नहीं है" तो उसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने कभी किसी व्यवस्था या नियम का उल्लंघन नहीं किया है क्योंकि उनके पास कोई व्यवस्था थी ही नहीं। लेकिन वह उसके विपरीत बातों को कहने का प्रयास करता हैः क्योंकि संसार के सभी लोग परमेश्वर की व्यवस्था का विरोध करते हैं, चाहे वह व्यवस्था एक किताब में लिखी हो (रोमियों 2:27; 3:21),या उनके हृदय में लिखी है (रोमियों 2:14-15), उन सभी ने व्यवस्था का उल्लंघन किया है! और क्योंकि सभी लोगों ने व्यवस्था का उल्लंघन किया हैं, सारे लोग परमेश्वर के क्रोध के अधीन हो गये हैं! क्योंकि व्यवस्था से परमेश्वर का क्रोध उत्पन्न होता है, वह कभी परमेश्वर के अनुग्रह को उत्पन्न नहीं कर सकता, जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा और परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर मनुष्य के विश्वास दोनो का आधार है।

इसलिए, जहां कहीं भी, यहूदियों, मसीहीयों या मुस्लिमों ने व्यवस्था के कामों के अनुसार अपने धर्मी ठहरने का प्रयास किया, वहां पर बाइबल की एक भी प्रतिज्ञा पूरी नहीं हुई। मनुष्य का विश्वास विद्यमान नहीं अर्थात पूरी तरह से निरर्थक है! व्यवस्था के अनुसार किये गये मनुष्य के कार्य और ईश्वरीय कृपा पूरी तरह से एक दूसरे का बहिष्कार करते हैं। इसलिए रोमियों 4:16 के अनुसार, व्यवस्था के कामों को करने के द्वारा मनुष्य परमेश्वर की कृपा और परमेश्वर की

प्रतिज्ञाओं को प्राप्त नहीं किया जा सकता! इसीलिए जितने भी लोग व्यवस्था के अनुसार जीवन व्यतीत करते है, वे चाहें यहूदी हो, मसीही या मुसलमान हों परमेश्वर की प्रतिज्ञा और परमेश्वर के अनुग्रह के वारिस नहीं हो सकते!

---

[5] हिंदू धर्म का मानना है कि एक व्यक्ति के व्यक्तिगत कर्म (किसी के अच्छे और बुरे कार्यों के बीच संतुलन का प्रभाव) निर्धारित करते हैं कि वह पुर्नजन्म के चक्र में ऊपर होगा या नीचे। यहूदी और मुस्लमान विश्वास करते हैं कि एक व्यक्ति के भले और बुरे कामों के बीच का संतुलन अंतिम न्याय के दिन मापदंड पर यह निर्धारित करता है कि वह व्यक्ति जन्नत में जाएगा या फिर नरक में डाला जाएगा। मानववादी और व्यवस्थावादी मानते हैं कि उनके भले और बुरे कामों के बीच संतुलन उनके भविष्य को निर्धारित करता है।

4:16ब – 17अ

खोज 4. **परमेश्वर की प्रतिज्ञाः प्राप्त करने वाला और सन्तोष।**

(1) परमेश्वर ने अब्राहम और उसके "वंशजों" से प्रतिज्ञा की थी।

गलातियों 3:16-17 में इंगित किया गया "बीज" या वंश किसी और को नहीं परन्तु प्रभु यीशु मसीह को दर्शाता है। लेकिन रोमियों 4:16 में, "वंश" अब्राहम के सारे वंशजों को दर्शाता है। परमेश्वर ने अब्राहम के सारे वंशजों से प्रतिज्ञा की थी (रोमियों 4:16) जिसमें बहुत से देश शामिल हैं (रोमियों 4:17; प्रकाशितवाक्य 21:3, यहां पर बहुवचन में "लोग" कहा गया है। इन लोगों में यहूदियों में से वे लोग भी शामिल हैं जिन्होंने मूसा की लिखित व्यवस्था को प्राप्त किया हैं और वे लोग भी शामिल है जिन्होंने मसीह (वंश) के आने की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया (उत्पत्ति 12:3; 15:5-6;22:17-18) और उनमें गैर मसीहियों में के वे लोग भी शामिल हैं जिन्होंने लिखित व्यवस्था को प्राप्त नहीं किया है, लेकिन जिन्होंने अब्राहम के समान आने मसीह अर्थात यीशु मसीह के आने की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया।

इसलिए, परमेश्वर की प्रतिज्ञा उन लोगों को दी गयी है जो उस वंश, अर्थात मसीह, अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, चाहें वे स्वाभाविक रूप से खतना कराये हुए यहूदी हों या खतना रहित गैर यहूदी हों। अब्राहम केवल दो समुदाय के लोगों का ही पिता नहीं है, अर्थात् :

- इस्राएली (खतना कराये हुए मसीही जिनमें से बहुत से लोग यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते (होशें 1:6,8 और यशायाह 1:10)[6]
- और कलीसिया (खतना रहित गैर यहूदी लोग जिनमें से सभी लोग यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते।) (मत्ती 7:21; मत्ती 13:36-43)।

अब्राहम एक जाति के लोगों का पिता है,[7] विशेष तौर पर उनका जो लोग प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, फिर चाहे वे लोग मूल रूप से इस्राएल के खतना कराये हुए लोगों में से हों या फिर अन्यजातियों के खतनारहित लोगों में से हों।

(2) इस प्रतिज्ञा का सार यह है कि अब्राहम और उसका "बीज" संसार का वारिस होगा।

यह प्रतिज्ञा बार बार उस प्रतिज्ञा की ओर संकेत करती है जो परमेश्वर ने उत्पत्ति 12:3 से की थी, कि परमेश्वर अब्राहम के बीज अर्थात उसके वंश (एकवचनः यीशु मसीह) से संसार की सारी जातियों को आशीष देगें। परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं कि यीशु मसीह और उसके अनुयायी "संसार" के वारिस होगें (रोमियों 4:13)। उन्हें विश्व व्यापक अधिकार दिया जाएगा। यह प्रतिज्ञा मसीह के दूसरे आगमन पर पूरी होगी, जब मसीह सभी चीजों को बहाल करेगा (प्रेरितों 3:21), जब सृष्टि को उसकी नाशमान बंधुवाई से छुटकारा मिलेगा (रोमियों 8:21), जब स्वर्ग और धरती पर की सारी चीज़ों को एक के अधीन कर दिया जाएगा (इफिसियों 1:10) और जब मसीह और मसीही लोग नयी धरती अर्थात धार्मिकता के अधिकारी होगें (2पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:1-2)!

---

[6] होशे 1:6,8 में परमेश्वर इस्राएल को "अप्रिय" और "मेरे लोग नहीं" कहकर सम्बोधित करते हैं। यशायाह 1:10 में परमेश्वर इस्राएल को "सदोम और गोमोराह" कहकर पुकारते हैं। रोमियों 9: 6 में पौलुस कहता है कि जितने स्वाभाविक रूप में इस्राएली हैं वे सभी "आत्मिक इस्राएली" या "परमेश्वर का इस्राएल" नहीं हैं।

[7] सच्चे "इस्राएल" को परमेश्वर द्वारा नाश नहीं किया गया, और न ही नये नियम की कलीसिया को उसकी जगह दी गयी, लेकिन उसका उच्च स्तर अपनी जगह पर बना ही रहा और वरन उसकी सीमा का विस्तार गैर यहूदियों में से विश्वासियों को समावेशित करने की वजह से और बढ़ गया।

कदम 3. प्रश्न। व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये रोमियों 4:1-17अ में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

4:3-5

प्रश्न:1. **"आरोपण" (गिना जाना, समझा जाना, दिया जाना, श्रेय देना) शब्द का अर्थ क्या है?**

ध्यान दें। रोमियों 4:3-5 काम करने वाले व्यक्ति के बारे में बात नहीं करता है, लेकिन उसके बारे में बात करता है जो उस पर विश्वास करता है। उसका विश्वास की उसके लिए धार्मिकता गिना गया। यह शब्द "गिना जाना रोमियों की पुस्तक में एक महत्वपूर्ण शब्द है। उसका अर्थ निम्नलिखित है:

- किसी के खाने में डाला जाना (उदाहरण के तौर पर, किये गये काम की मज़दूरी देना)
- किसी की गुणवत्ता या विशेषता को बताना, किसी व्यक्ति के बारे में किसी कथन की पुष्टि करना और फिर उस व्यक्ति के साथ वैसा ही व्यवहार करना। (उदाहरण के लिए: धार्मिक)

"गिना जाना" एक कानूनी वाक्य है और जिसका अर्थ यह है कि एक व्यक्ति के नैतिक व्यवहार के बदलने से पहले उसका सम्बन्ध परमेश्वर के साथ और उसकी व्यवस्था की मांग के साथ में बदल जाता है।

- बाइबल कहती है परमेश्वर मनुष्य के जीवन में उन चीजों का आरोपण नहीं करता है जिसका वह वास्तव में हकदार है (उदारहण के तौर पर, उसकी अधार्मिकता और उसके पाप)(यशायाह 53:5-6; भजन संहिता 32:1-2; रोमियों 4:7-8)।
- और बाइबल इसके अलावा यह भी कहती है कि परमेश्वर उसके खाते में ऐसी चीजों को जोड़ता या उन्हें आरोपित करता है जिसका वास्तव में वह हकदार नहीं है (उदाहरण के तौर पर, यीशु मसीह की धार्मिकता) (2 कुरिन्थियों 5:21)

यीशु ने हमारे बदले में एक विकल्प बनकर हमारे सारे पापों के दण्ड को अपने ऊपर उठा लिया है (1कुरिन्थियों 5:21)। उसकी धार्मिकता को हमें दे दिया गया है। उसकी मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और उसके सिंहासन पर विराजमान होने के कारण यीशु मसीह, मसीहियों के लिए "उद्धार"(धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा) बन गये हैं (1 कुरिन्थियों 1:30)।

4:3

प्रश्न 2. **किस चीज़ को अब्राहम के खाते में धार्मिकता गिना गया?**

ध्यान दें। "गिने जाने " शब्द का अर्थ है किसी को कोई चीज़ देना है। "यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया" वाक्य का इस्तेमाल जिस प्रकार से उत्पत्ति 15:6 में अब्राहम के लिए किया गया था उसी प्रकार से भजन संहिता 106 :30-31 में पिनहास के लिए किया गया है। लेकिन उनके शब्द समान होने के बाद भी उसका अर्थ बिल्कुल अलग है।

(1) पिनहास के "काम" उसकी दृष्टि में धार्मिकता गिने गये।

गिनती 25:1-9 में, इस्राएलियों के बीच में एक महामारी उत्पन्न हो गयी, क्योंकि वे आत्मिक और यौन सम्बन्धी अनैतिकता करने लगे थे। वे मूर्तिपूजा और व्यवभिचार करने लगे। पिनहास, जो महायाजक का पुत्र था, वह खड़ा हुआ उसने आगे बढ़कर व्यभिचार करने वाले स्त्री पुरुष को दण्डित किया। परमेश्वर में उसके विश्वास ने उसके भीतर अपने परमेश्वर के प्रति जलन और भक्ति को उत्पन्न किया और परमेश्वर की प्रति उसकी इस जलन और उसके काम को उसके लिए धार्मिकता गिना गया। उसके इस काम को *धार्मिक दृष्टिकोण* से भला काम गिना गया, अर्थात उसके व्यवहार के क्षेत्र में शुद्धिकरण, लेकिन उसका नियम या व्यवस्था के कोई सरोकार नहीं था। पिनहास ने परमेश्वर के लिए यह काम किया! उसके भक्ति के काम या परमेश्वर के लिए जलन के कारण उसका उद्धार नहीं हो गया (वह धर्मी ठहराया गया)।

(2) अब्राहम का "विश्वास" उसके लिए धार्मिकता गिना गया।

परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि संसार की सारी जातियां "अब्राहम के वंश के द्वारा" आशीषित होगीं (उत्पत्ति 12:3; उत्प. 22:18; प्रेरितों के काम 3:25)। "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया। (उत्पत्ति 15:6; रोमियों 4:3; गलातियों 3:6)। अब्राहम का परमेश्वर व परमेश्वर द्वारा की गयी प्रतिज्ञा (जो उसने मसीह के सम्बन्ध में की थी) उसे उसके लिए धार्मिकता गिना गया। परमेश्वर ने *धार्मिक दृष्टिकोण* से उसके विश्वास को एक अच्छा प्रतिउत्तर माना, अर्थात परमेश्वर के साथ उसकी स्थिति या सम्बन्ध की कानूनी तौर पर ठीक ठहराये के सम्बन्ध में जिसका धार्मिक मत से कोई सम्बन्ध नहीं था। परमेश्वर ने अब्राहम के लिए कुछ किया! धर्मी ठहराये जाने के क्षेत्र में उसका परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास करना ही उसकी सही प्रतिक्रिया के रूप में गिना गया। अब्राहम को अपने विश्वास के कारण धर्मी (परमेश्वर की दृष्टि में घर्मी ठहरना) ठहराया गया। परमेश्वर उसे 'धर्मी' कहता है, और उसके साथ पूरी तरह से आगे को एक धर्मी के समान व्यवहार करता है।

रोमियों की पुस्तक अध्याय 4 में सारी बहस केवल इस बात पर अड़ी हुई हैं कि "विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाते हैं" और "व्यवस्था के कामों के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है। यदि पौलुस ने अब्राहम की जगह पर पिनहास के उदाहरण का इस्तेमाल कर लिया होता तो वह, रोमियों 4 के सम्पूर्ण तर्क का उल्लंधन करने वाला ठहरता। इन दोनों ही स्थानों में सन्दर्भ पूरी तरह से भिन्न है। अब्राहम तो एक विश्वासी बन गया (अर्थात वह व्यक्ति जो पूरी तरह से परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराया जा चुका है), लेकिन पिनहास एक विश्वासी के जीवन को जिया, और उसने एक धार्मिक काम करने के द्वारा दिखाया कि वह एक धर्मी व्यक्ति है।

उत्पत्ति 15:6 के अनुसार, परमेश्वर ने अब्राहम के साथ कुछ खास प्रतिज्ञाएं कीं: अब्राहम की अपना निज पुत्र होगा और उसके वंश आकाश के तारों के समान होगें। हालांकि ये प्रतिज्ञाएं अभी तक पूरी नहीं हुई थी, लेकिन उसने विश्वास किया कि परमेश्वर उसे अपने समय में पूरा करेगा। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर सन्देह नहीं किया गया वरन, उसे विश्वास के द्वारा स्वीकार किया गया। उसके विश्वास को न तो एक विश्वास करने वाले जन के भले कामों के तौर पर माना गया और न ही उसे किसी ऐसे काम के रूप में देखा गया जिसके बदले में उसे कुछ देना जरूरी था (जिसके बदले में उसके खाते में कुछ राशि डालनी पड़े)। इसके विपरीत, उसने विश्वास किया और जिसके कारण उसे मसीह की धार्मिकता प्रदान की गयी। उसका विश्वास खाली हाथ के समान था जिनके द्वारा उसने परमेश्वर के द्वारा वह धार्मिकता(कृपा)प्राप्त की जिसके लिए वह हकदार नहीं था।(रोमियों 5:17)

इसी कारण परमेश्वर ने उसे अपनी दृष्टि में धार्मिक घोषित किया और उसके साथ हमेशा सिद्ध तौर पर एक धार्मिक जन के रूप में व्यवहार किया।

4:13

प्रश्न 3. **इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि वह जगत का वारिस होगा ?**

ध्यान दें। परमेश्वर ने अब्राहम और उसके सभी आत्मिक बच्चों से यह प्रतिज्ञा की, कि वे यीशु मसीह के साथ मिलकर सारे जगत के वारिस होगें। परमेश्वर ने अब्राहम से तीन प्रतिज्ञाएं कीं:

- अब्राहम व उसके वंशजों को प्रतिज्ञा का देश (फरात नदी से लेकर मिस्र की सीमा के बीच का क्षेत्र) देने के लिए कहा (उत्पत्ति 15:5-7; उत्पत्ति 22:17-18) ।
- उसके वंशज (जिसमें केवल यहूदी ही नहीं होगें) आकाश के तारों और समुद्र के बालू के कणों के समान अनगिनत होगें।
- अब्राहम के "वंश" (एकवचन) सारी जातियां (देश) आशीषित होगीं।

परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पहले दो भाग तब ही पूरे हो गये थे जब यहोशू ने कनान को जीत लिया था (यहोशू 21:43-45; 23:14-16)। परन्तु परमेश्वर की तीसरी प्रतिज्ञा का पूरा होना केवल तभी प्रारम्भ हुआ जब यीशु का प्रथम आगमन हुआ!

अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया; खास तौर पर यह कि उसके वंशजों में से किसी एक के द्वारा जगत के सारे देशों को आशीषित करेगें! इसका अर्थ है कि अब्राहम ने(लगभग 2000 ई.पू) उद्धारकर्ता अर्थात यीशु मसीह के आगमन पर विश्वास किया (गलातियों 3:16)। आने वाले उद्धारकर्ता अर्थात यीशु मसीह में अब्राहम का विश्वास ही वह उपाय था जिसके द्वारा परमेश्वर ने अब्राहम को धर्मी ठहराया।

यहूदी लोगों को मानना था कि केवल वे ही प्रतिज्ञा के देश के वारिस होगें, क्योंकि उन्होंने ही व्यवस्था का पालन किया है, विशेष तौर पर खतना का। लेकिन, रोमियों 4:13 और 16 के अनुसार, परमेश्वर ने सभी से प्रतिज्ञा की अर्थात " अब्राहम के सभी आत्मिक बच्चों से", जिसका अर्थ है यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले यहूदियों और गैर यहूदियों दोनों से।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि यीशु मसीह में विश्वास करने वाले सभी कुलपति और सेवक, यीशु मसीह सभी जगत के वारिस होगें। वे न केवल मध्य पूर्व के (इस्राएल), वरन सारे जगत के वारिस होगें। यह प्रतिज्ञा तब पूरी होगी जब प्रभु यीशु का दूसरा आगमन होगा और जब वह अन्तिम चरण में सम्पूर्ण नयी धरती पर अर्थात पूर्व में, मध्य पूर्व में, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में अपने यशस्वी राज्य की स्थापना करेगा। तब दानिय्येल 7:27 के अनुसार "तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करने वाले उसके आधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेगें।" तब एक नया विश्वास (यीशु मसीह में विश्वास) सारी नयी पृथ्वी को भर देगा।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 4:1-17अ से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 4:1-17अ से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदारहण।

4:2-5. परमेश्वर की उपस्थिति में आकर मसीहियों के पास घमन्ड करने के लिए कुछ नहीं है। वे परमेश्वर की इच्छा का पालन करने या अपने भले कामों पर कभी भी घमण्ड नहीं कर सकते।

4:3. बाइबल की शिक्षाएं सत्य का निर्णायक आधार और उसकी परख है।

4:5-8. यदि आप पाप अभी तक क्षमा नहीं हुए है, तो आप यीशु में विश्वास करें। जब आप यीशु मसीह के द्वारा भक्तिहीन को धर्मी ठहराने वाले परमेश्वर पर विश्वास करते हैं तो, वह आपे सभी पपों को क्षमा करता है और फिर कभी आपको पापी के रूप में नहीं देखता है (इब्रानियों 8:12)। वह आपको अपनी दृष्टि में 100 प्रतिशत मानता है!

4:9-12 परमेश्वर की आशीषों में परमेश्वर द्वारा 100 प्रतिशत क्षमा तथा 100 प्रतिशत ग्रहण किया जाना शामिल है क्योंकि उसकी सन्तानों में केवल खतना कराये हुए यहूदी और यीशु में विश्वास करने वाले मुस्लिम ही शामिल नहीं हैं, परन्तु खतनारहित अन्यजातियों में से भी लोग हैं।

4:13. यीशु मसीह में विश्वास करने के केवल आत्मिक परिणाम ही नहीं है, वरन हर सम्भव शारीरिक परिणाम भी होते हैं। परमेश्वर के द्वारा भविष्य में दी जाने वाली आशीष यह है कि *जगत का हर देश* यीशु मसीह[8] पर विश्वास करने वालों विश्वासियों की मीरास बन जाएगा।

---

[8] मसीह के दूसरे आगमन के बाद में सारे जगत (नयी धरती) के वारिस होना समृद्धि सुसमाचार से बिल्कुल अलग बात है जिसमें विश्वासियों से वर्तमान समय में भौतिक आशीषों को दी जाने की बात की गयी है।

4:14-16. व्यवस्था के अनुसार जीवन व्यतीत करना इस बात का दावा करता है कि आप कभी परमेश्वर के द्वारा धर्मी नहीं ठहराये जाएंगे और आपको परमेश्वर की कोई भी प्रतिज्ञा प्राप्त नहीं होगी। लेकिन विश्वास के द्वारा प्रभु यीशु द्वारा किये गये उद्धार के कार्य के अनुग्रह में जीवन व्यतीत करना इस बात का दावा करता है कि आप पहले से परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहरा दिये गये हो और आपको निश्चय की परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाएं प्राप्त होगी, जिसमें सारे जगत का वारिस बनना भी शामिल हैं।

2. रोमियों 4:1-17अ से व्यक्तिगत अनुप्रयोग के उदाहरण।

रोमियों 4:5 में लिखा है कि भक्तिहीनों को मसीह द्वारार धर्मी ठहराने वाले परमश्वेर पर विश्वास करना धार्मिकता गिना जाता है। मैं मानता हूं कि मैं अपने कामों के द्वारा नहीं वरने केवल अपने विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया हूं। मेरा मानना है कि मेरा धर्मी ठहराया गया हूं, लेकिन यह नहीं है कि परमेश्वर ने मुझे मेरे कुछ कामों के लिए मज़दूरी दी है या मुझे कोई प्रतिफल दिया गया है वरन परमश्वेर आज़ादी और अनुग्रह के साथ मुझे पूरी तरह से धर्मी मानता हूं और वैसा ही मेरे साथ व्यवहार करता है। मेरा धर्मी ठहराया जाना इस बात पर आधारित है कि मसीह ने मेरे स्थान पर क्या किया है और मेरे विश्वास करने पर वह मेरे लिए वास्तविकता बन गया है।

रोमियों 4:12 में यह नहीं कहा गया है कि खतना कराने वाले लोगों (अर्थात, व्यवस्थ का पालन करने वाले लोग) को धर्मी ठहराया जाएगा, वरन यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले धर्मी ठहराये जाएंगे, चाहे वे पहले से ही खतना किये(यहूदी और मुसलमान) हुए लोग हों। मै यह विश्वास करता हूं कि कोई भी धार्मिक विधी या अनुष्ठान, जैसे कि खतना या बपतिस्मा मेरा उद्धार नहीं कर सकता। लोगों और कलीसिया द्वारा किया गया कोई भी कार्य मुझे धर्मी नहीं ठहरा सकता। पुराने नियम में दिया गया खतना कोई धर्मी ठहराये जाने की शर्त या उपाय नहीं था, परन्तु वह तो विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने का चिन्ह व मुहर थी। ठीक इसी प्रकार से नये नियम में बपतिस्मा, धर्मी ठहरने की शर्त या उपाय नहीं है, वह विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने का एक चिन्ह व मुहर है (कुलुस्सियों 2:11-12; रोमियों 2:28-29)।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 4:1-17अ में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 4:1-17क का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **2 इतिहास 16,18,20 और 26** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(3) कलीसिया की सेवाकाईयांः इफिसियों 4:12-13।**
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 21:28-32 में दिये गये **"दो पुत्रों का दृष्टान्त"** और लूका 13:1-9 में दिये गये **"फल रहित अंजीर के पेड़ के दृष्टान्त"** की तैयारी करें। दृष्टान्त को समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।